

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 14, सिस्टमैटिक्स, मसीह का देवत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण और अन्य पाठ, विशेषताएँ और कार्य

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 14 है, सिस्टमैटिक्स, मसीह का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण और अन्य ग्रंथ, गुण और कार्य।

हम मसीह के ईश्वरत्व के पाँच ऐतिहासिक प्रमाणों पर अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

आगे बताते हुए उन्होंने कहा कि यीशु में परमेश्वर के गुण हैं। हमने इब्रानियों 1:11 और 12 में उसकी अपरिवर्तनीयता देखी है। मुझे निश्चित रूप से अपनी बाइबल की आवश्यकता है।

और हमने यूहन्ना 1, आयत 14 और 17 में देखा कि वह अनुग्रह और सच्चाई से भरा हुआ था। यह पुराने नियम की अवधारणा है जो भजन 117, निर्गमन 34, हेसेड वेमेट, परमेश्वर की वाचागत प्रेममयी दया और विश्वासयोग्यता जैसी जगहों से मिलती है। यीशु ईश्वर-मनुष्य के रूप में इससे भरा हुआ था।

वास्तव में, यह इतना भरा हुआ है कि जॉन अपने एक अतिशयोक्ति का उपयोग कर सकता है और कह सकता है कि पुराना नियम तुलनात्मक रूप से केवल कानूनी प्रतीत होता है। कानून मूसा के माध्यम से दिया गया था। अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के माध्यम से आया।

यीशु में उनकी प्रचुरता की तुलना में, ऐसा लगता है जैसे वे पहले अस्तित्व में ही नहीं थे। जो, ज़ाहिर है, वे थे, क्योंकि वे पुराने नियम के थे। वे पुराने नियम के विचार थे।

वचन देहधारी हुआ, पद 14, और हमारे बीच में डेरा किया। और हमने उसकी महिमा देखी, जो पिता के एकलौते पुत्र की तरह ईश्वरीय महिमा है, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है। अनुग्रह, सच्चाई और महिमा, यूहन्ना 1:14 और 17।

अनंत काल, कुलुस्सियों 1, आसानी से यूहन्ना 1, कुलुस्सियों 1, इब्रानियों 1 के साथ चुन सकता था। उन तीनों में से कोई भी मसीह के ईश्वरत्व के लिए मेरी पहली पसंद हो सकता था। लेकिन मैं अलग-अलग मसीह संबंधी उप-सिद्धांतों से संबंधित अंशों को एक साथ रखना चाहता था, और इसीलिए मैंने अपने शुरुआती बिंदु से केवल इब्रानियों 1 को चुना। साथ ही, इसमें सभी पाँच प्रमाण हैं, जो अद्वितीय हैं, लेकिन कुलुस्सियों 1 बार-बार मसीह के ईश्वरत्व की शिक्षा देता है।

यहाँ कहा गया है कि वह शाश्वत है। वह सभी चीज़ों से पहले है, श्लोक 17। सभी चीज़ें उसके द्वारा बनाई गई थीं, श्लोक 16, और उसके लिए।

और वह सब चीज़ों से पहले है। और उसी में, सब चीज़ें एक साथ टिकी हुई हैं। यह, सब चीज़ों से पहले, अस्थायी रूप से बोल रहा है।

यह समय के संदर्भ में है। वह सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि होने से पहले से ही अस्तित्व में था। वह सृष्टि से पहले से ही अस्तित्व में था।

वह शाश्वत है। उसके पास अनंत काल का दिव्य गुण है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 में भी यही बात है, जिसके बारे में दुर्भाग्यवश हमने ज़्यादा कुछ नहीं कहा है।

प्रकाशितवाक्य 1:17. जब मैंने उसे देखा, जो मनुष्य के पुत्र यीशु का प्रकटन है, तो मैं उसके पैरों पर मरा हुआ सा गिर पड़ा। पर उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूँ।

मैं मर गया, और देखो, मैं हमेशा के लिए जीवित हूँ। मैं पहला हूँ और आखिरी भी, यह यशायाह से है, उस तरह की भाषा, और इसका इस्तेमाल वहाँ यहोवा के अनंत काल के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। मैं पहला हूँ, और मैं आखिरी भी हूँ।

वे स्थान जहाँ हम नहीं जाएँगे, यशायाह 41.4, 44.6, 48.12। यशायाह 41.4, 44.6, 48.12। वहाँ, यहोवा वक्ता है, और यहाँ, परमेश्वर का पुत्र स्वयं उसी भाषा का उपयोग करता है। मैं प्रथम हूँ, इसलिए मेरे पहले कोई नहीं है। मैं अंतिम हूँ, इसलिए मेरे बाद कोई नहीं है।

मैं शाश्वत परमेश्वर हूँ, इसका अर्थ है। यीशु में परमेश्वर के गुण हैं, अनुग्रह, सत्य और महिमा, यूहन्ना 1:14 और 17। अनंत काल, कुलुस्सियों 1:17, प्रकाशितवाक्य 1:17।

अपरिवर्तनीयता, इब्रानियों 1:11 और 12. शक्ति, फिलिप्पियों 3. 1 कुरिन्थियों 15 विश्वासियों के पुनरुत्थान के लिए शास्त्रीय पाठ के रूप में उचित रूप से प्रसिद्ध है। लेकिन, एक पुस्तक परियोजना के लिए उस पर शोध करते समय, मुझे पता चला कि फिलिप्पियों 3:20 और 21 परमेश्वर की संप्रभु शक्ति के उन्हीं सत्तों का सबसे सारगर्भित सारांश है, जो हमारे वर्तमान, नश्वर, कमजोर, अप्रतिष्ठित शरीरों को अमर, अविनाशी में बदलकर अपने लोगों को नई पृथ्वी पर अनन्त जीवन के लिए उपयुक्त बनाता है।

मुझे पहली स्लाइड पर भी भ्रष्ट शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए था। अमर, अविनाशी, शक्तिशाली, गौरवशाली शरीर, पवित्र आत्मा द्वारा इतने अधिक प्रभावित कि उन्हें आध्यात्मिक शरीर कहा जा सकता है। वे अमूर्त नहीं हैं।

वे भौतिक और आध्यात्मिक हैं, इस अर्थ में कि वे पूरी तरह से आत्मा द्वारा नियंत्रित और नियंत्रित हैं, जो हमें नई पृथ्वी पर जीवन के लिए योग्य बनाता है। फिलिप्पियों 3:21 में परमेश्वर के पुत्र के लिए भी यही योग्यता बताई गई है। पॉल कहते हैं कि हमारी नागरिकता, फिलिप्पी एक रोमन उपनिवेश था।

रोमन सैनिकों ने इसकी स्थापना की, और रोम ने उन्हें नागरिकता के महान अधिकार दिए। हमारी नागरिकता, हमारा अंतिम घर, और निष्ठा स्वर्ग में है, पॉल लिखते हैं, फिलिप्पियों 3:20, और स्वर्ग से हम एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह की प्रतीक्षा करते हैं, जो हमारे दीन शरीर को अपने गौरवशाली शरीर के समान रूपांतरित करेगा। यह उन पहले कुरिन्थियों 15 विरोधाभासों के समान है।

नाशवान, नाशवान, कमज़ोर, अप्रतिष्ठित, अविनाशी, शक्तिशाली, गौरवशाली शरीर। वर्तमान शरीर, पुनरुत्थान शरीर। यहाँ, प्रभु यीशु मसीह, जिसका हम स्वर्ग से इंतज़ार कर रहे हैं, हमारे दीन शरीर को अपने गौरवशाली शरीर के समान रूपांतरित करेंगे। इसे उस शक्ति से देखें जो उसे सभी चीज़ों को अपने अधीन करने में सक्षम बनाती है।

यह पुनरुत्थान की शक्ति है। यह परिवर्तनकारी शक्ति है जो नश्वर मनुष्यों को नई पृथ्वी पर जीवन के लिए तैयार करेगी। रोमियों 8 में, पॉल कहते हैं कि हमारे पास नश्वर शरीर में अनन्त जीवन है।

फिर, हमें अमर शरीर में अनंत जीवन मिलेगा। ऐसा कौन करेगा? परमेश्वर, पिता, पवित्र आत्मा, पहला कुरिन्थियों 15, और उल्लेखनीय रूप से, पुत्र, फिलिप्पियों 3:21। यीशु में परमेश्वर के गुण हैं।

एक बार फिर, यह एक तर्क है। कुछ ऐसे गुण हैं जो केवल परमेश्वर के पास हैं। पवित्रशास्त्र उनमें से कई गुणों को यीशु को बताता है।

इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि यीशु मसीह ईश्वर के अवतार हैं। सबसे शक्तिशाली और प्रचलित सत्य यह है: यीशु के ईश्वरत्व का प्रमाण। यीशु वे कार्य करते हैं जो केवल ईश्वर ही कर सकता है।

सृष्टि, विधान, मुक्ति, न्याय और पूर्णता। और इन पाँच कार्यों में से चार इब्रानियों 1 में हैं। अच्छाई, कितना भरा हुआ अंश है। इतनी सारी बातें चल रही हैं।

मसीह के तीन पदों के लिए मुख्य प्रमाण पाठ को भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा के तीन गुना पद भी कहा जाता है। और यह इस बात का मजबूत तर्क दे रहा है कि सुसमाचार व्यवस्था से भी अधिक महत्वपूर्ण है। जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान में देखा था जहाँ 2:1-4 अध्याय एक की सच्चाइयों पर लागू होता है, यीशु पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के मध्यस्थों, भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों से अधिक महत्वपूर्ण है।

इसलिए, वह जो संदेश लेकर आता है, सुसमाचार, वह कानून से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है। और सुसमाचार को त्यागने वालों पर बड़ा दंड आता है। बेशक, यह ऐतिहासिक संदर्भ में यहूदी ईसाइयों के लिए लिखा गया है जिन्होंने उत्पीड़न से बचने के लिए विश्वास को त्यागने का प्रयास किया था।

यीशु परमेश्वर के कार्य करता है, इब्रानियों 1:2। इन अंतिम दिनों में परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा हम से बात की है, जिसे उसने सब वस्तुओं का वारिस ठहराया है, और उसी के द्वारा उसने जगत की रचना भी की है। परमेश्वर, पिता ने अपने पुत्र के द्वारा जगत की रचना की है।

यह एक ऐसा काम है जो सिर्फ परमेश्वर ही करता है—हे भगवान। यही सच्चाई आयत 10 में भी सिखाई गई है।

हे प्रभु, आपने स्वर्गदूतों के विपरीत जो परमेश्वर के सेवक हैं, आरंभ में पृथ्वी की नींव रखी, और स्वर्ग आपके हाथों का काम है, जहाँ भजन 102 आयत 25-27 उत्पत्ति 1 :1 की ओर संकेत करते हैं। इसी तरह, यूहन्ना 1:3 भी निश्चित रूप से यही करता है। आरंभ में वचन था।

वचन परमेश्वर के साथ था। वचन परमेश्वर था। वही आदि में परमेश्वर के साथ था।

सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गई थीं, और उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था। यह व्यापक भाषा है। आप यह नहीं कह सकते हैं, ठीक है, जैसा कि पंथ बाइबल का गलत अनुवाद करते हैं, तथाकथित यहोवा के साक्षियों का तथाकथित न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन, अन्य सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गई थीं।

नहीं, नहीं। यह एक व्यापक भाषा है। सभी चीजें, सकारात्मक और नकारात्मक, कुछ भी उसके बिना नहीं बना।

और कुछ नहीं है। इसे कहने का कोई और तरीका नहीं है। उसने सभी चीजें बनाई।

उसके बिना कुछ भी नहीं बना, और उसने खुद को नहीं बनाया। वह सृष्टिकर्ता है। इसलिए, वह ईश्वर है।

यह ईश्वर के पूर्व-अवतार के रूप में था। उसने ऐसा किया। वह देहधारी शब्द, प्रकाश, पुत्र के रूप में ईश्वर है। कुलुस्सियों 1, एक बहुत ही अलग भाषा में, वही बात सिखाता है: कि मसीह को व्यापक रूप से पूरे शेषांग के निर्माता के रूप में नामित किया गया है।

कुलुस्सियों 1:16. इसका मतलब यह है कि वह ज्येष्ठ है। वह सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है।

ओह, इसका मतलब है कि भगवान ने उसे पहले बनाया, जैसा कि एरियस ने कहा, और इसलिए, उसने उसे अन्य चीजों को बनाने के लिए इस्तेमाल किया। तथाकथित यहोवा के साक्षी धर्मशास्त्र एरियन क्राइस्टोलॉजी है, जिसे गर्म किया गया है। और अब उनके पास ऐतिहासिक धर्मशास्त्र भी है क्योंकि वे एरियस को एक नायक के रूप में घोषित करते हैं।

मुझे दुख होता है क्योंकि कई बार लोग इनके झांसे में आ जाते हैं। कई बार गरीब लोग। कई बार लोगों को शिक्षा का लाभ नहीं मिल पाता।

मेरा दिल दुखी है। इसीलिए मैंने पंथों के लिए मंत्रालय के लिए प्रार्थना की। और इसका आंशिक रूप से उत्तर मिल गया है।

क्या आप एक कठिन सेवकाई चाहते हैं? आप ऐसा करने में खुद का समर्थन कैसे करेंगे? लेकिन लड़के, लोगों को सुसमाचार सुनने की ज़रूरत है। हे भगवान। यहाँ बताया गया है कि सारी सृष्टि में ज्येष्ठ का क्या मतलब है।

इसका मतलब वही है जो भजन 89:27 में है। मैं उसे, मसीहा को, अपना ज्येष्ठ पुत्र, पृथ्वी के राजाओं में सबसे महान बनाऊँगा। इसका यही मतलब है।

इसका मतलब है श्रेष्ठता। इसका मतलब शाब्दिक रूप से सबसे पहले बनाया जाना नहीं है। याकूब शाब्दिक रूप से ज्येष्ठ पुत्र नहीं था, लेकिन उसे ज्येष्ठाधिकार का अधिकार मिला, और वह ज्येष्ठ पुत्र बन गया, यानी दोनों में से उच्चतर।

इसी तरह, यीशु ज्येष्ठ पुत्र होगा, सर्वोच्च समग्र सृष्टि, क्योंकि उसके द्वारा सभी चीज़ें बनाई गई थीं। संदर्भ वास्तव में दिखाता है कि लक्ष्य यह दिखाना था कि हर चीज़ में, वह प्रमुख हो सकता है, श्लोक 18। वह सृष्टि पर है, श्लोक 15-17, और चर्च पर, जो नई सृष्टि का हिस्सा है, श्लोक 18-20।

वह सृष्टि में सर्वोपरि है क्योंकि वह सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि था। इस बार, इब्रानियों 1:2 और यूहन्ना 1:3 में पूर्वसर्ग के माध्यम से के बजाय, यह पूर्वसर्ग में या द्वारा है। उसके द्वारा, सभी चीज़ें बनाई गईं।

सभी चीज़ों के व्यापक नामकरण को सुनो। स्वर्ग में और पृथ्वी पर। हे मनुष्य, मैंने यह पहले कहाँ सुना है? उत्पत्ति 1:1.

शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। पॉल कहते हैं कि बेटा पिता का प्रतिनिधि था। दृश्यमान और अदृश्य।

कोई और श्रेणी नहीं है। बेटे ने दृश्य और अदृश्य सभी चीज़ों का निर्माण किया। इसका मतलब है, व्यापक रूप से, उसने सब कुछ बनाया।

वैसे, आकाश और पृथ्वी पहले से ही व्यापक हैं। यह सब कुछ कहने का एक यहूदी हिब्रू तरीका है। फिर, अदृश्य चीज़ों को थोड़ा सा खोला जाता है, चाहे वे सिंहासन हों, प्रभुत्व हों, शासक हों या अधिकारी हों।

स्वर्गदूतों के कुछ प्रकार के भेद। हम ठीक से नहीं जानते कि यह क्या है, रैंक या जो भी हो, लेकिन भेद। बेटा कोई स्वर्गदूत नहीं है।

बेटे ने स्वर्गदूतों को बनाया। बेटा स्वर्गदूत नहीं है, इब्रानियों 1. जब पिता अपने ज्येष्ठ पुत्र को स्वर्गारोहण के समय स्वर्गीय दुनिया में लाता है और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठता है, तो वह कहता है, सभी स्वर्गदूत उसकी आराधना करें। स्वर्गदूत स्वर्गदूतों की पूजा नहीं करते।

देवदूत ईश्वर की आराधना करते हैं। ईश्वर पुत्र ईश्वर है। पिता और पवित्र आत्मा से अलग, लेकिन उनके बराबर।

सभी चीजें उसी के द्वारा बनाई गई थीं। स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीजें बनाई गई थीं, दृश्यमान और अदृश्य, चाहे सिंहासन, प्रभुत्व, शासक, या अधिकारी। सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए बनाई गई थीं।

यहाँ एक श्लोक के भीतर ही यह समावेश है, क्योंकि यह उसी तरह से शुरू और समाप्त होता है। उसने सब कुछ बनाया। यह वास्तव में और भी बहुत कुछ कहता है।

इसके अलावा, सभी चीजें उसके लिए बनाई गई थीं, जिसका अर्थ बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि इब्रानियों 1:2, और 3:1, 3 में कहा गया है कि वह वारिस है। हम थोड़ी देर में उस पर वापस आएँगे। लेकिन अभी के लिए, सृष्टि का काम बेटा ही करता है।

यह केवल परमेश्वर का कार्य है। पुत्र पुराने नियम में निरन्तर ईश्वरीय कार्य करता है। परमेश्वर न केवल सृष्टिकर्ता है, बल्कि वह ईश्वरीय कार्य करने वाला भी है।

ईश्वर का विधान क्या है? वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज्म। ईश्वर का विधान उसका सबसे पवित्र, बुद्धिमान और शक्तिशाली है, जो उसके सभी प्राणियों और उनके सभी कार्यों को संरक्षित और नियंत्रित करता है। प्यूरिटन जानते थे कि वे किस बारे में बात कर रहे थे।

भगवान की व्यवस्था के दो उपसमूह हैं: संरक्षण और शासन। वह पवित्र, बुद्धिमान और शक्तिशाली है, अपने सभी प्राणियों और उनके सभी कार्यों का संरक्षण और शासन करता है। संरक्षण का अर्थ है ईश्वर का दिव्य रखरखाव करने वाला व्यक्ति।

वह अपनी सृष्टि को बनाए रखता है। वह उसकी देखभाल करता है। वह उसे बनाए रखता है।

सरकार का मतलब है कि वह न केवल ऐसा करता है, बल्कि वह इसे अपनी योजनाओं और लक्ष्यों और परम महिमा की ओर भी निर्देशित करता है। पुराने नियम में, परमेश्वर केवल यही कार्य करता है। नए नियम में, बेटा कार्य में शामिल होता है।

हम इसे दो स्थानों पर देखते हैं। इब्रानियों 1:3. मैं हर बार पहले इब्रानियों की ओर लौटता हूँ, भले ही यह हमें तलवार चलाने की कसरत में बदल दे, बाइबल के साथ आगे-पीछे कोड़े मारना। इब्रानियों 1:3. वह परमेश्वर की महिमा की चमक है, उसकी प्रकृति की सटीक छाप है, और वह अपनी शक्ति के वचन से ब्रह्मांड को बनाए रखता है।

पुत्र ब्रह्माण्ड को धारण करता है। उसने न केवल इसे बनाया, बल्कि इसे बनाए भी रखा। वह इसे धारण करता है।

वह न केवल सृष्टिकर्ता परमेश्वर है, बल्कि वह ईश्वरीय विधान का परमेश्वर भी है। कुलुस्सियों 1 में इसी सत्य को एक अलग भाषा में कहा गया है। 1:17.

वह सभी चीज़ों से पहले है। वह शाश्वत है, जैसे कि केवल ईश्वर ही है, और उसमें सभी चीज़ें एक साथ टिकी हुई हैं। शब्दकोश में वास्तव में कहा गया है कि वह बना रहता है और बना रहता है।

वे इस शब्द के प्रयोग में सृजन और प्रोविडेंस दोनों को देखते हैं। मुझे इसके बारे में नहीं पता। उन्होंने इसे सृजन के रूप में पढ़ाया, इसके ऊपर एक श्लोक है, और हो सकता है कि इस श्लोक में वे दोनों अर्थ हों, यह शब्द, लेकिन इसमें निश्चित रूप से दूसरा अर्थ भी है।

उसमें सभी चीज़ें एक साथ टिकी हुई हैं। वह अपने शक्तिशाली वचन से सभी चीज़ों को संभाले रखता है। यानी, नया नियम पुराने नियम में वर्णित परमेश्वर के कार्यों को और अधिक विशिष्टता प्रदान करता है।

पुत्र सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि है। पुत्र, पिता और पवित्र आत्मा के साथ मिलकर ईश्वरीय कार्य करता है। पुत्र हमारी भक्ति, हमारी पूजा का पात्र है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह विश्वास का विषय है क्योंकि पुत्र छुटकारे का कार्य करता है। पुराना नियम इतना स्पष्ट है। उद्धार प्रभु का है।

खैर, उद्धार कई मायनों में प्रभु यीशु मसीह का है, जिसकी शुरुआत इब्रानियों 1:3 से होती है। पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वह ऊँचे स्थान पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया। परमेश्वर के पुत्र ने पापों के लिए शुद्धिकरण किया। बेशक, इस विषय को उजागर किया गया है और विस्तार से बताया गया है, इब्रानियों 7 में मेल्कीसेदेक-मसीह समानता के साथ, और फिर 8 में नई वाचा की भाषा के साथ, और 9 और 10 में प्रायश्चित के बारे में बताया गया है, जो पवित्रशास्त्र में कहीं और बलिदान करने वाले पुजारी रूपक के रूप में पूरी तरह से नहीं है।

यीशु हमारे महान महायाजक हैं, और वे स्वयं ही वह बलिदान हैं जो परमेश्वर को संतुष्ट करता है और उसके लोगों को शुद्ध करता है। इसका संकेत अध्याय 1 में मूल रूप से दिया गया है। पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वे ऊँचे स्थान पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गए। इब्रानियों के अध्याय 10 में हमें बताया गया है कि यह बैठना दर्शाता है कि उनका कार्य समाप्त हो गया है।

यह पूरा हो गया है। याजकों के बैठने के लिए तम्बू में कोई फर्नीचर नहीं था। इब्रानियों 10:11 में, हर याजक प्रतिदिन खड़ा होता है, इब्रानियों 10.11, और हर याजक प्रतिदिन अपनी सेवा में खड़ा होता है, एक याजक के रूप में परमेश्वर के लिए दिव्य सेवा, बार-बार वही बलिदान चढ़ाता है, जो कभी पापों को दूर नहीं कर सकता।

लेकिन जब मसीह ने पापों के लिए हमेशा के लिए एक ही बलिदान चढ़ाया, तो वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया, और तब से इंतज़ार कर रहा था जब तक कि उसके शत्रु उसके पैरों के नीचे की चौकी न बन जाएँ। भजन 110 का एक और संकेत, क्योंकि एक ही बलिदान के द्वारा, इब्रानियों 10:14, उसने हमेशा के लिए उन लोगों को सिद्ध कर दिया है जो पवित्र किए जा रहे हैं। इब्रानियों 1:3, पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वह ऊँचे स्थान पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया।

वह परमेश्वर के लिए उन परिवृत्तियों में से एक है। वह परमेश्वर, पिता के दाहिने हाथ पर बैठ गया। इसका क्या अर्थ है? अध्याय 10, जिसमें शास्त्र स्वयं पर टिप्पणी करता है, हमें बताता है कि उसका कार्य पूरा हो गया है।

इसके अलावा और कोई प्रायश्चित का काम नहीं है। हाँ, आज भी कुछ त्यौहारों पर मुसलमान जानवरों की बलि देते हैं। इससे कोई फायदा नहीं होता।

कुछ यहूदी चाहते हैं कि मंदिर का जीर्णोद्धार हो और फिर से जानवरों की बलि दी जाए। अगर ऐसा हो भी जाए, तो यह बेकार होगा। क्योंकि यीशु ने एक ही बलिदान के ज़रिए हमेशा के लिए पाप का प्रायश्चित कर दिया था, और उसका बलिदान पूरा हो गया।

जहाँ वह बैठा था, उसके कारण पिता ने उसका बलिदान स्वीकार किया। पापों का शुद्धिकरण करने के बाद, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया। यीशु का कार्य पूरा हो गया है।

यह परिपूर्ण है। परमेश्वर को इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, रोमियों 3:25-26, और बाद में इब्रानियों में, हम सीखते हैं कि यीशु का बलिदान इसका आधार था, 9:15।

इसलिए, वह एक नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि जो लोग बुलाए गए हैं, इब्रानियों 9:15, वे अनन्त विरासत का वादा प्राप्त कर सकें क्योंकि एक मृत्यु हुई है जो उन्हें पहली वाचा के तहत किए गए अपराधों से छुटकारा दिलाती है। भगवान ने पुराने नियम में बलिदान प्रणाली को नियुक्त किया, लेकिन अंततः बैल और बकरियों के खून ने पाप को दूर नहीं किया। खून, यानी बैल और बकरियों की हिंसक मौत, लेकिन उन्होंने एक तरह से पाप को दूर कर दिया, है न? हाँ, भगवान ने उन लोगों को माफ कर दिया जिन्होंने उन जानवरों पर अपने पापों को ईमानदारी से स्वीकार किया जो तब उनके स्थान पर मर गए, लेकिन अंततः, उन बलिदानों ने भगवान के मेमने, जॉन 1 की ओर इशारा किया, जिसके बारे में बैपटिस्ट कहते हैं कि वह दुनिया के पापों को दूर करेगा।

यीशु, आप देखिए, उनका बलिदान पूरा हो चुका है। यह परिपूर्ण है, यहाँ तक कि पुराने नियम के पापों के लिए भी, अगर आप चाहें, तो यह कारगर है। इसे यहाँ रखना सही रहेगा।

यह प्रभावशाली है, यह प्रभावकारी है, यहाँ तक कि इब्रानियों 9:13 के अनुसार, पहली वाचा के तहत किए गए पापों के लिए भी यह लाभदायक है। पुराने नियम के बलिदान प्रभावशाली थे, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपने पुत्र के कार्य के परिप्रेक्ष्य से देखा, फिर भी भविष्य के। जो कोई भी मसीह में विश्वास करता है, वह पापों की क्षमा को जान सकता है, चाहे वह कोई भी पाप क्यों न हो, यीशु के पूर्ण, परिपूर्ण और पूरी तरह से प्रभावशाली बलिदान के कारण।

मैं इसके लिए केवल यही कह सकता हूँ कि हेलेलुयाह। छुटकारे के कई पहलुओं को परमेश्वर के पुत्र के कार्य, तथा परमेश्वर के पुत्र के व्यक्तित्व और कार्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। यह एक और जगह है जहाँ वे पूरक हैं।

यूहन्ना 1:12 में, यूहन्ना अपने सुसमाचार की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। हम 12:37 पर नज़र डालते हैं। हालाँकि उसने उनके सामने बहुत से चिन्ह दिखाए थे, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं करते थे।

20:30 और 31 के पूर्वसूचक के रूप में, यहाँ यीशु द्वारा किए गए चिन्हों को लिखा गया है, ताकि आप विश्वास कर सकें कि वह मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके आप उसके नाम में अनन्त जीवन पा सकते हैं। अर्थात्, 12:37, यूहन्ना के सुसमाचार के पहले भाग, चिन्हों की पुस्तक में दर्ज यीशु के प्रति बहुमत की प्रतिक्रिया को सारांशित करता है, और वह प्रतिक्रिया अविश्वास और अस्वीकृति है। 20:30, और 31 यूहन्ना के सुसमाचार का उद्देश्य बताता है, और इसी तरह, यूहन्ना के सुसमाचार के अंतिम भाग में बहुमत की प्रतिक्रिया को सारांशित करता है, और वह है उद्धार करने वाला विश्वास।

दुख की बात है कि सच्ची ज्योति दुनिया में आने वाली है, यह कहने के बाद, यूहन्ना 12:10 और 11 में दर्ज करता है, वह दुनिया में था, और दुनिया उसके द्वारा बनी, फिर भी दुनिया ने उसे नहीं जाना। वह अपने घर आया, क्षमा करें, लेकिन उसके अपने लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। यूहन्ना पहले नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है क्योंकि यह बहुमत की प्रतिक्रिया है और क्योंकि वह हमारे लिए सुसमाचार की रूपरेखा तैयार कर रहा है।

अर्थात्, यूहन्ना 1:10 और 11 यूहन्ना 1:19 से 12 के अंत तक के अनुरूप है। लेकिन यूहन्ना 1:12 और 13 के लिए प्रभु का धन्यवाद, जिसने यूहन्ना के सुसमाचार के शेष भाग, अध्याय 12 से 20, के उत्तर को रेखांकित किया, जिसमें 21 एक उपसंहार है। लेकिन जितनों ने उसे ग्रहण किया, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उन्हें उसने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, जो न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से जन्मे हैं।

लेकिन उन सभी के लिए जो यीशु के नाम पर विश्वास करते हैं, यीशु के व्यक्तित्व पर विश्वास करते हैं, जहाँ नाम व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, निश्चित रूप से, जिसका स्रोत निर्गमन 34 में उस महान मार्ग में पाया जाता है, यीशु के नाम, व्यक्तित्व और कार्य पर विश्वास करने से पापों की क्षमा मिलती है, 1 यूहन्ना के संदर्भ में गोद लेने की प्राप्ति होती है, जो पिता के पुनर्जन्म में अगली आयत, 13 में निहित है। परमेश्वर का पुत्र बचाता है। वह कार्य एक ऐसा कार्य है जिसे केवल परमेश्वर ही करता है।

हम इसे कुलुस्सियों 1 में देखते हैं, जो उद्धार की एक और छवि है। छह बड़े प्रायश्चित उद्देश्यों में से एक मेलमिलाप है। हम इसे 1:19 में देखते हैं जो उसमें सारी परिपूर्णता के लिए मंच तैयार करता है, कुलुस्सियों 1:19, परमेश्वर को प्रसन्नता से वास करने के लिए।

और उसके द्वारा परमेश्वर ने सब वस्तुओं का अपने साथ मेल कर लिया, चाहे वे पृथ्वी की हों या स्वर्ग की, क्रूस पर बहाए गए उसके लहू के द्वारा शांति स्थापित करके। और हे कुलुस्सियों, तुम जो पहले निकाले हुए और बैरी मन के थे, और बुरे काम करते थे, उसने अपनी मृत्यु के द्वारा अपनी देह में तुम्हारा मेल कर लिया। ध्यान दीजिए, क्रूस पर बहाए गए उसके लहू के द्वारा, 20, उसकी देह में उसकी मृत्यु के द्वारा।

यह ईश्वर के पुत्र के रक्त और शरीर का एक यूचरिस्टिक संदर्भ है, जो कलवरी पर उनके अद्वितीय बलिदान का जश्न मनाता है। पद 22 में ईश्वर का उद्देश्य अंतिम पवित्रता है, जो केवल उन लोगों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जो अंत तक विश्वास को बचाने में दृढ़ रहते हैं, पद 23। अन्य अंश, वह नहीं, हमें आश्चस्त करते हैं कि जो लोग विश्वास करते हैं वे दृढ़ रहेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें सुरक्षित रखता है।

फिर भी, ईश्वरीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी का तनाव यहाँ भी महसूस किया जाता है, जहाँ मानवीय जिम्मेदारी पर जोर दिया जाता है। विश्वासियों को शाश्वत मेल-मिलाप का आनंद लेने के लिए अंत तक दृढ़ रहना चाहिए। अन्य स्थानों पर परमेश्वर की कृपा के कारण शिक्षा दी जाती है, और वे अंत तक दृढ़ रहेंगे।

यह यहाँ नहीं सिखाया जाता है, लेकिन इसे अन्यत्र, यहाँ तक कि पौलुस में भी पढ़ाया जाता है। कुलुस्सियों 1:13 और 14 भी सिखाता है कि यीशु भी यही करता है, परमेश्वर का छुटकारे का कार्य। पिता ने हमें अंधकार के क्षेत्र से छुड़ाया है और हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित किया है, जिसमें हमें छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त है।

यदि यीशु द्वारा ईश्वर के कार्य करना उनके ईश्वरत्व के पाँच ऐतिहासिक प्रमाणों में सबसे प्रचलित और शायद सबसे शक्तिशाली है, तो यीशु का उद्धारक होना, एकमात्र ऐसा कार्य करना जो बचाता है, विश्वास को बचाने का उद्देश्य होना, ईश्वर के लोगों को बनाए रखना, ये सभी बातें, शायद यही यीशु द्वारा ईश्वर के कार्य करने का सबसे शक्तिशाली उप-पहलू है। इन बातों को रेट करना कठिन है, लेकिन यह शानदार है। हमेशा।

यह सामान्य विश्वास नहीं है जो बचाता है, बल्कि मसीह में विश्वास है। पौलुस ने फिलिप्पी के जेलर से कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो, और तुम और तुम्हारा परिवार बच जाओगे। न्याय, यह इब्रानियों 1 में नहीं है। मत्ती 25:31 से 46, पवित्र शास्त्र में नरक के सिद्धांत पर सबसे शक्तिशाली एकल मार्ग है, जिसकी अंतिम आयत ने उस पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है जिसे हम अनन्त नियति का सिद्धांत कहते हैं।

मैथ्यू 25:46, और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। पहले से ही, सेंट ऑगस्टीन ने, वर्ष 400 के आसपास, कहा था कि एक ही विशेषण अनन्त का उपयोग बकरियों और भेड़ों के भाग्य के लिए किया जाता है। क्या इसका अर्थ दो अलग-अलग चीजें हैं? नहीं, इसका अर्थ दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं।

एयोनियोस शब्द का अर्थ है लंबी उम्र, संदर्भ में उम्र की परिभाषा के साथ। यहाँ एयोनियोस शाश्वत को अनंत जीवन द्वारा परिभाषित किया गया है। क्या आप इसे सीमित करेंगे? मैंने लोगों को कहते सुना है कि किसी ने कभी इसे सीमित नहीं किया।

खैर, हाँ, एक आदमी ने ऐसा किया। वैसे, विलियम हिस्टन, एक विनाशवादी, एक प्रारंभिक वैज्ञानिक थे, जिन्होंने सोचा था कि उल्कापिंड और उस तरह की चीजें, धूमकेतु, यही शब्द है, कि दुष्टों को धूमकेतु पर रखा जाएगा और जला दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि वह अनन्त दंड को सीमित करना चाहते थे, और उन्होंने अनन्त जीवन को भी सीमित कर दिया।

वह सुसंगत था, लेकिन यह बेतुका है। सेंट ऑगस्टीन सही है। अनन्त जीवन नए युग, नए आकाश और नई पृथ्वी से संबंधित ईश्वर का जीवन है।

इसका कोई अंत नहीं है, और इसलिए, अनन्त दण्ड का भी कोई अंत नहीं है। यह एक अद्भुत, एक सशक्त मार्ग है। जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और उसके साथ उसके सभी स्वर्गदूत होंगे, तब तुम उसके महिमामय सिंहासन पर बैठोगे।

उसके सामने, सभी राष्ट्र इकट्ठे होंगे, और तुम लोगों को एक दूसरे से अलग करोगे जैसे एक चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। यहाँ एक पैटर्न है। यह इस प्रकार है।

श्लोक 32, भेड़, बकरियाँ, ए, बी। श्लोक 33, भेड़, बकरियाँ, ए, बी, दोहराया गया। फिर 34 से 40 तक, इसमें भेड़ शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, लेकिन इसमें भेड़ों का ज़िक्र किया गया है। फिर 41 से 45 तक, इसमें बकरी शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, लेकिन इसमें बकरियों का ज़िक्र किया गया है।

तो, यह भेड़, बकरी, भेड़, बकरी, भेड़ें बहुत, बकरियाँ बहुत। श्लोक 46 उन्हें शक्तिशाली रूप से उलट देता है। तीन बार भेड़, बकरी कहने या तीसरी बार यह दिखाने के बाद कि ऐसा मत कहो, वह कहता है फिर ये, उसका मतलब है कि जिन लोगों के बारे में हमने अभी बात की, बकरियाँ, शब्द का उपयोग किए बिना, अनन्त दंड में चली जाएँगी, लेकिन धर्मी अनन्त जीवन में चले जाएँगे।

पंच लाइन शक्तिशाली है क्योंकि तब यीशु दो बातों को उलट देता है, खोए हुए और बचाए गए, एक शक्तिशाली तरीके से। ताकि ये शब्द हमारे होठों पर रह जाएँ, अनन्त जीवन। न्याय का यह कार्य कौन करता है? यह मनुष्य का पुत्र, प्रभु यीशु मसीह है।

वह अपने दाहिने हाथ की भेड़ों से कहेगा, आओ, यह अंतिम बुलावा है। आओ, तुम जो मेरे पिता के द्वारा धन्य हो, उस राज्य के अधिकारी हो जो जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। इसके बाद जो शब्द आते हैं, वे उन्हें आश्चर्यचकित कर देते हैं।

वे नहीं जानते थे कि परमेश्वर उनके अच्छे कामों पर नज़र रख रहा है, और वास्तव में, उनके कार्यों ने परमेश्वर में उनके विश्वास की वास्तविकता को प्रदर्शित किया। वह ही लोगों को अनंत नियति सौंपता है। इसे कहने का सही तरीका है: सौंपना।

खोए हुए लोगों के पापपूर्ण कर्मों के कारण वे नियति पहले से ही तय हो चुकी थी। दूसरी ओर, पद 41 में, यह मनुष्य का लौटता हुआ पुत्र है, यह प्रभु यीशु है, जो न्याय करता है क्योंकि वह अपने बाईं ओर वालों से कहता है, मेरे पास से चले जाओ, तुम शापित हो, धन्य हो, शापित हो, अनन्त आग में, पिता के राज्य में, अनन्त आग में, और शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई विपरीतता में। प्रकाशितवाक्य 20 बहुत स्पष्ट है कि इसका अर्थ अनन्त सचेत दंड है।

प्रकाशितवाक्य 20 और पद 10, और शैतान जिसने उन्हें धोखा दिया था उसे आग की झील में फेंक दिया गया, जहाँ जानवर और झूठे भविष्यद्वक्ता को फेंक दिया गया था, और वे सभी पीड़ित हैं। मुझे भाषा को बिल्कुल सही से समझना है। और शैतान जिसने उन्हें धोखा दिया था उसे आग और गंधक की झील में फेंक दिया गया, जहाँ जानवर और झूठे भविष्यद्वक्ता थे, और वे हमेशा-हमेशा के लिए दिन-रात तड़पते रहेंगे।

यही वह न्याय है जिसका शैतान अनुभव करेगा। मत्ती 25:41 में यीशु ने कहा, मेरे पास से चले जाओ, शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई अनन्त आग में। नहीं, यह समझना मुश्किल नहीं है कि यह क्या है, अगर आप इस शास्त्र की तुलना प्रकाशितवाक्य 20:10 से करें, और यहाँ तक कि यहाँ, श्लोक 46, सबसे शक्तिशाली एकल श्लोक है जिसने चर्च को यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया कि दोनों नियति अनन्त हैं।

पुत्र न्याय का कार्य करता है, यूहन्ना के सुसमाचार में तो ऐसा ही है; यीशु तर्क दे रहे हैं कि पुत्र भी पिता के समान सम्मान का हकदार है और इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए उनके तर्कों में से एक यह है। पद 21, जैसा कि पिता मृतकों को उठाता है, यूहन्ना 5:21, और उन्हें जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहता है उसे जीवन देता है। पिता किसी का न्याय नहीं करता, बल्कि उसने न्याय का सारा काम पुत्र को सौंप दिया है, ताकि सभी पुत्र का सम्मान करें, जैसे वे पिता का सम्मान करते हैं।

पुत्र का आदर नहीं करता, वह उस पिता का आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा है। वास्तव में, यह फिर से जॉन के अतिशयोक्ति में से एक है क्योंकि यदि आप न्याय के अंशों का अध्ययन करते हैं, जो, मेरा विश्वास करो, मैंने किया है, तो मैंने उन पुस्तकों का ट्रैक खो दिया है जिन्हें मैंने नरक के सिद्धांत पर लिखा या संपादित किया है। शुक्र है, मैंने स्वर्ग पर एक-दो किताबें लिखीं, जो एक आशीर्वाद था।

वैसे भी, आधे अंश पिता को न्याय का श्रेय देते हैं, आधे पुत्र को। अगर मैं एक व्यवस्थित बयान देना चाहूँ, हालाँकि कोई भी अंश पवित्र आत्मा को न्याय का श्रेय नहीं देता, तो मैं कहूँगा कि चूँकि परमेश्वर पवित्र त्रिमूर्ति है, इसलिए न्याय पवित्र त्रिमूर्ति का काम है, खास तौर पर पिता और पुत्र का। लेकिन जब यूहन्ना कहता है कि परमेश्वर ने सारा न्याय पुत्र को दे दिया है, तो निश्चित रूप से पुत्र न्याय का काम करता है, जो कि केवल परमेश्वर का काम है।

ओह, मैं 1 कुरिन्थियों 6 जानता हूँ। क्या आप नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करने जा रहे हैं? यह एक उलझन भरी आयत है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम परमेश्वर के सिंहासन पर

बैठकर लोगों का न्याय करेंगे। मैं शम्पा और रोस्त्रर द्वारा 1 कुरिन्थियों पर मेरी पसंदीदा टिप्पणियों में से एक को देखकर वास्तव में धन्य हो गया, इसका मतलब है कि हम परमेश्वर के न्याय के लिए आमीन कहने जा रहे हैं।

यही बात मैंने सालों तक सोची और सिखाई, और मैं इस मामले में उनके समर्थन से वाकई बहुत खुश हूँ। स्वर्गदूतों के बारे में हमारा न्याय यह नहीं है कि हम परमेश्वर की जगह ले रहे हैं, बल्कि हम परमेश्वर की टीम में हैं। और उस दिन, हम पाप को और भी स्पष्ट रूप से देखेंगे और परमेश्वर के न्याय को और भी स्पष्ट रूप से देखेंगे।

हम उसकी कृपा के लिए उसकी महिमा करेंगे, और हम उसके न्याय के लिए उसकी महिमा करेंगे। और हम स्वर्गदूतों का न्याय इस अर्थ में करेंगे कि हम शैतान और उसके दुष्टात्माओं की परमेश्वर की निंदा से सहमत हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 1 पौलुस का सबसे शक्तिशाली नरक मार्ग है। और अंदाज़ा लगाइए कि न्यायाधीश कौन है? आपने अंदाज़ा लगा लिया, प्रभु यीशु मसीह। 2 थिस्सलुनीकियों 1. ये थिस्सलुनीकियों उत्पीड़न का सामना कर रहे थे। पद 5, यह सबूत है, पॉल लिखते हैं, 2 थिस्सलुनीकियों 1:5, परमेश्वर के धर्मी न्याय का, ताकि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य समझे जाओ, जिसके लिए तुम दुख भी उठा रहे हो।

वास्तव में, परमेश्वर यह उचित समझता है कि जो लोग तुम्हें कष्ट देते हैं, उन्हें बदला दिया जाए और जो लोग कष्ट में हैं, उन्हें भी राहत दी जाए। और यही वह समय है जब यह अंतिम अर्थ में घटित होगा। जब प्रभु यीशु अपने शक्तिशाली स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से प्रकट होंगे, आग की लपटें, उन लोगों पर प्रतिशोध बरसाएंगे जो परमेश्वर को नहीं जानते और जो हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार का पालन नहीं करते, वे प्रभु की उपस्थिति से और उनकी शक्ति की महिमा से दूर अनन्त विनाश की सजा भुगतेंगे, जब वह उस दिन अपने संतों में महिमा पाने और उन सभी लोगों के बीच आश्चर्यचकित होने के लिए आएंगे जिन्होंने विश्वास किया है।

वाह। यह नरक पर पॉलिन का सबसे विस्तृत अंश है। हालाँकि वह अक्सर ईश्वर के क्रोध की बात करता है, यहाँ वह इस धारणा को आगे बढ़ाता है और इसे सताए गए ईसाइयों को राहत देने और न्याय दिलाने के लिए यीशु के दूसरे आगमन से जोड़ता है।

पौलुस स्पष्ट रूप से सिखाता है कि हम प्रतिशोधात्मक न्याय को क्या कहते हैं। लौटता हुआ मसीह, पद 8, प्रतिशोध लेता है। वह लोगों को बदला देता है।

यह आयत 6 में है। परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देना उचित समझता है जो तुम्हें कष्ट देते हैं। नरक का न्याय न तो उपचारात्मक है और न ही शिक्षाप्रद। यह प्रतिशोध में दिया गया परमेश्वर का क्रोध है।

यह प्रतिशोधात्मक न्याय है जो हमेशा के लिए परमेश्वर की महिमा करेगा। यह एक गंभीर सत्य है। और मुझे जॉन के सुसमाचार में ऐसे लोगों की याद आती है जो कहते हैं कि पिता ने बेटे को दुनिया की निंदा करने के लिए नहीं भेजा, बल्कि इसलिए कि दुनिया उसके माध्यम से बच सके।

यह यूहन्ना 3:17 और 18 है, जो यूहन्ना 3:16 के ठीक बाद है। तो, परमेश्वर का दिल पापियों को बचाने का है। लेकिन दिन के अंत में, परमेश्वर जीतेगा और हारेगा नहीं।

और हर व्यक्ति के भाग्य में परमेश्वर को दोषमुक्त और महिमान्वित किया जाएगा। यह एक कठिन कथन है। यह पूरी सच्चाई नहीं है।

यह अंतिम सत्य है। इस बीच, परमेश्वर संसार से प्रेम करता है। परमेश्वर अपने पुत्र को भेजता है।

परमेश्वर चाहता है कि हम पापियों से प्रेम करें, उनके साथ सुसमाचार बाँटें, और प्रार्थना करें कि वे उद्धार पाएँ। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 2 थिस्सलुनीकियों 1 में न्याय करने वाला व्यक्ति वापस आने वाला प्रभु यीशु मसीह है। वास्तव में, आप देख सकते हैं कि यीशु परमेश्वर के कार्य करता है।

वह सृजन करता है। वह पालन-पोषण करता है। यह ईश्वर का कार्य है।

वह मुक्ति दिलाता है। वह न्याय करता है। वह पूर्णता प्रदान करता है।

इब्रानियों 1:2. अब आप जानते हैं कि मैंने इब्रानियों को क्यों चुना। यार, कितना भरा हुआ अंश है। बेटा ही वह है जिसके द्वारा परमेश्वर ने अंतिम दिनों में हमसे निर्णायक रूप से बात की, जिसे उसने सभी चीजों का वारिस नियुक्त किया, और जिसके द्वारा उसने दुनिया भी बनाई।

हमने बाद वाले विचार का अध्ययन किया है, लेकिन पहले वाला विचार भी मौजूद है। वास्तव में, परमेश्वर क्रम को उलट देता है। वह उत्तराधिकारी है, और वह सह-निर्माता भी है।

वह क्या कर रहा है? वह दिखा रहा है कि वह Z और A है। वह ओमेगा और अल्फा है। वह अंत और शुरुआत है। वह सब कुछ है।

जब यह कहा जाता है कि वह वारिस है, तो इसका मतलब है कि अंत में सब कुछ उसके पास आएगा। वह सभी चीजों को पूर्ण करेगा और उस पूर्ण होने पर उसकी महिमा होगी। यीशु मसीह वारिस है।

क्या यह किसी भी इंसान के बारे में कहा जा सकता है? खैर, हम परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के साथ जुड़े हुए वारिस हैं, लेकिन इस अर्थ में नहीं। यह एक बड़ा अर्थ है। यह एक बड़ा अर्थ है।

यह एक अधिक परम भाव है। और यह भाव विशेष रूप से पुत्र का है। वह उत्तराधिकारी है।

पराकाष्ठा उसी की है। एक बार फिर, कुलुस्सियों 1 में एक अलग भाषा का उपयोग किया गया है, लेकिन इसका अर्थ वही है। कुलुस्सियों 1:16.

क्योंकि उसी के द्वारा सारी चीज़ें बनाई गईं, स्वर्ग और पृथ्वी, दृश्यमान और अदृश्य, चाहे स्वर्गदूतों में से कोई भी भेद हो, सब उसी ने बनाया। सारी चीज़ें उसी के द्वारा और उसी के लिए बनाई गईं। यह ईस है ऑटोन , जो उनके लिए भाषा है, इब्रानियों के लेखक द्वारा यीशु को अंतिम उत्तराधिकारी कहने से मेल खाती है।

मसीह न केवल सृष्टि में परमेश्वर का प्रतिनिधि है, बल्कि वह सृष्टि को बनाए भी रखता है, जैसा कि हम 1:17 में देखते हैं, और वह सृष्टि का अंत है। सभी चीज़ें उसके लिए बनाई गई थीं, यानी उसके अंतिम उद्देश्यों और महिमा के लिए। वह वारिस है।

परमेश्वर पुत्र के रूप में जो मनुष्य का पुत्र बन गया, वह सभी चीज़ों का वारिस होगा। वह सृष्टिकर्ता, ईश्वरीय व्यवस्था का ईश्वर, मुक्तिदाता, न्यायकर्ता और हाँ, वह पूर्णकर्ता भी है। धर्मग्रंथ मसीह के ईश्वरत्व का गुणगान करते हैं।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम उनके ईश्वरत्व के पाँचवें ऐतिहासिक प्रमाण पर नज़र डालेंगे, कि ईश्वरीय उपासना उन्हीं की है, और उसके बाद, हम कुछ समस्याओं, तथाकथित अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम और केनोसिस और केनोटिक सिद्धांतों से निपटेंगे। लेकिन अभी के लिए, हम इसे समाप्त करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र संख्या 14 है, सिस्टेमेटिक्स, क्राइस्ट का ईश्वरत्व, इब्रानियों 1, 5 प्रमाण और अन्य ग्रंथ, विशेषताएँ और कार्य।